[illegible]

भक्तिकाल का विभाजन एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(स्नातक, हिंदी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष)

डॉ० - अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय

भक्तिकाल

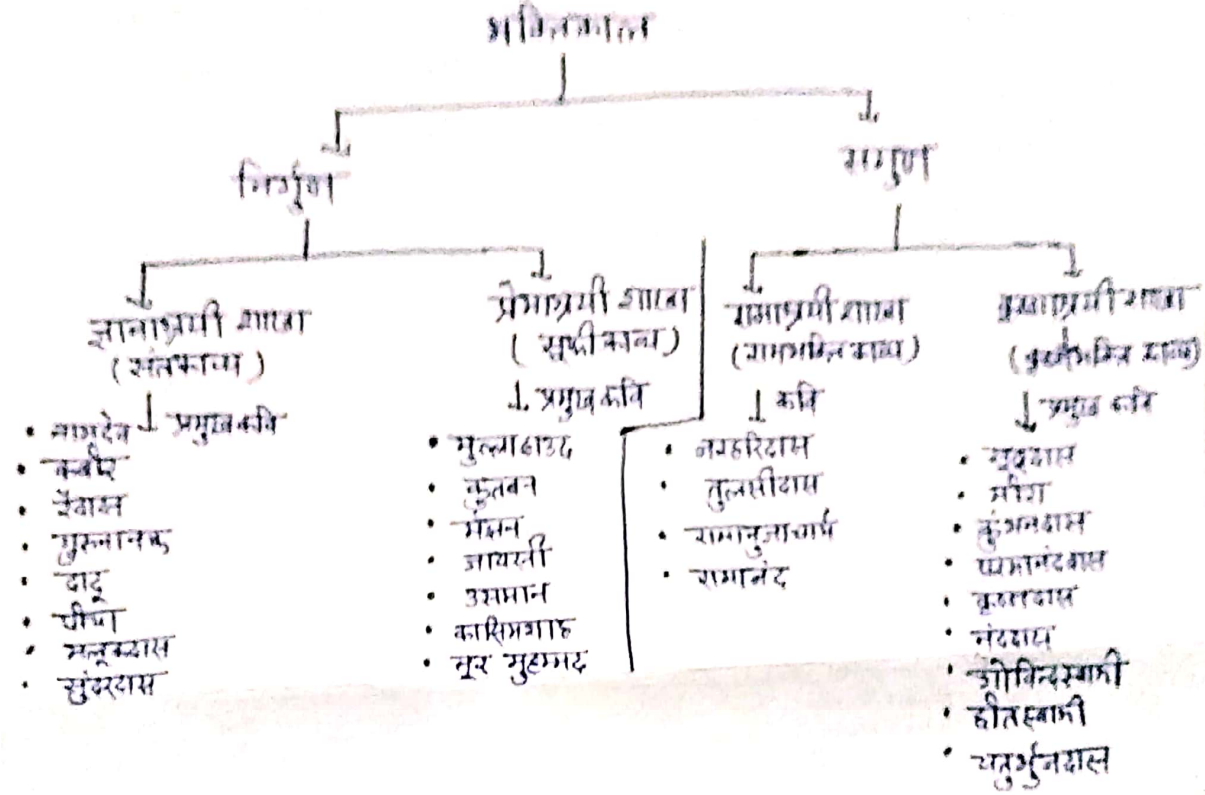

- निर्गुण
  - ज्ञानाश्रयी शाखा (संतकाव्य) → प्रमुख कवि
    - नामदेव
    - कबीर
    - रैदास
    - गुरुनानक
    - दादू
    - पीपा
    - मलूकदास
    - सुंदरदास
  - प्रेमाश्रयी शाखा (सूफी काव्य) → प्रमुख कवि
    - मुल्ला दाऊद
    - कुतबन
    - मंझन
    - जायसी
    - उसमान
    - कासिमशाह
    - नूर मुहम्मद
- सगुण
  - रामाश्रयी शाखा (रामभक्ति काव्य) → कवि
    - नरहरिदास
    - तुलसीदास
    - रामानुजाचार्य
    - रामानंद
  - कृष्णाश्रयी शाखा (कृष्णभक्ति काव्य) → प्रमुख कवि
    - सूरदास
    - मीरा
    - कुंभनदास
    - परमानंददास
    - कृष्णदास
    - नंददास
    - गोविन्दस्वामी
    - छीतस्वामी
    - चतुर्भुजदास

'निर्गुण ज्ञानाश्रयी' या 'संत' काव्यधारा'

इस काव्यधारा की प्रमुख प्रसिद्धी सामाजिक विषमताओं के प्रति जोरदार विद्रोह करने वाली काव्यधारा के रूप में है। इस काव्यधारा के कवियों का साहित्य भी इसी क्रांतिकारी मानसिकता का परिचायक है -

प्रमुख विशेषताएँ -

1. **अनिश्चित दार्शनिक आधार** - संत कवि किसी निश्चित दार्शनिक मत के समर्थक नहीं है। ये कवि साधारणत: निरक्षर है। इन्होंने दर्शनों को नहीं पढ़ा लेकिन ये बहुत से दर्शनों से प्रभावित हैं। इन पर शंकर के अद्वैतवाद के साथ-साथ नाथों के हठयोग, सूफियों के तसव्वुफ और वैष्णवों के प्रपत्तिवाद का प्रभाव दिखाई देता है। जैसे -

"लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गयी लाल॥" (अद्वैतवाद के ब्रह्म-जीव एकत्व का प्रभाव)

"मेरा मुझमें कुछ नहिं, जो कुछ है सो तोर,
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर।" (वैष्णव दर्शन के प्रपत्तिवाद का प्रभाव)

Scanned with CamScanner

② **निर्गुण ब्रह्म के प्रति आस्था-** संत कवियों का ब्रह्म निर्गुण निराकार व अमूर्त है। इनका लक्ष्य निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति है। यहाँ निर्गुण का अर्थ 'गुणहीन' नहीं 'गुणातीत' है। कबीर के यहाँ कभी-कभी निर्गुण ब्रह्म 'राम' या 'हरि' का नाम धारण कर लेते हैं और उनकी भक्ति भावना का आधार बन जाते हैं। लेकिन सिद्धांततः वे निर्गुण के ही पक्षधर हैं-

* "दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।"
* "निर्गुण राम जपहु रे भाई, अविगत की गति लखि न जाई।"

③ **सतगुरु का महत्व-** संतकाव्य में ब्रह्म निर्गुण है, जिसे जानने के लिये गुरु का महत्व प्रतिपादित किया गया है। उसे ईश्वर से ऊँचा स्थान दिया गया है। क्योंकि ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग दिखाने वाला गुरु ही है। जैसे-

"सतगुरु हमसूँ रीझकर, कहया एक परसंग।
बरस्या बादर प्रेम का भीज गया सब अंग॥"

④ **शास्त्रों का विरोध-** संतकवि शास्त्रों पर करारी चोट करते हैं क्योंकि शास्त्र 'लकीर का फकीर' बनाते है, जीवन को तार्किकता से समझने की ताकत नहीं देते। कबीर कहते हैं-

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय॥"

⑤ **माया का विरोध-** नाथ पंथ तथा शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित होने के कारण इनका मानना है कि माया मनुष्य में इच्छाएँ पैदा करके उसे दिग्भ्रमित कर देती है। वह मानव को मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर नहीं होने देती। नारी को भी इन्होंने माया के रूप में ही देखा है। माया का विरोध करते हुए ये कहते हैं-

"माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।"

⑥ **आडंबरों का विरोध-** कबीर व अन्य संत कवियों ने अपने व्यंग्य प्रहारों से आडम्बर फैलाने वाले मौलवियों और पण्डितों दोनों पर जम कर चोटें की। कबीर मौलवियों को कुछ इस तरह फटकारते हैं-

"काँकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥"

हिंदुओं पर भी चोट की- "पाहन पूजें तो हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़।
ताते तो चक्की भली, पीस खाए संसार॥"

Scanned with CamScanner

7. सामाजिक असमानताओं का विरोध- भक्ति संतों ने सामाजिक भेद-भाव के दंश को झेला था। इसलिए उन्होंने उन सामाजिक व्यवस्थाओं और मान्यताओं का प्रचंड विरोध किया जो वंचित वर्गों के शोषण की वैधता प्रदान करती है। उन्होंने वर्ण-व्यवस्था की उसकी असमानतीयता के कारण अपनी कटु आलोचना का विषय बनाया।

"जाति पाति पूछे नहीं कोई।
हरि को भजे सो हरि को होई॥"

8. सांप्रदायिकता का विरोध- संत कवियों ने भारतीय समाज में हिंदुओं व मुसलमानों के सह-अस्तित्व का काल था जिसमें दोनों के मध्य अपरिचय अविश्वास व विरोध का भाव था। संत कवियों ने प्रगतिशीलता का परिचय देते हुए दोनों को सौहार्द की सीख दी है-

"अरे इन दोउन राह न पाई।
हिंदुन की हिंदुआई देखी, तुरकन की तुरकाई॥"

Scanned with CamScanner